



बरसात में पशुओं की उचित देखभाल

विवेक जोशी* और उमेश डिमरी**

॥ भारत में बरसात का मौसम जून से सितंबर तक रहता है। मानसूनी बारिश का पशु स्वास्थ्य पर बड़ा प्रभाव देखा जाता है। इससे पशुपालकों को आर्थिक संकट से गुजरना पड़ सकता है। इसलिए बरसात के मौसम में सही समय पर उचित कार्रवाई एवं उपायों द्वारा पशुओं को स्वस्थ रखकर पशुपालक आर्थिक नुकसान से बच सकते हैं। ॥

बरसात में जमीन गीली होने के कारण फिसलन बढ़ जाती है जिससे पशुओं में गिरकर गंभीर चोट लगने या पैर टूटने का खतरा बना रहता है। इसके लिए पशुपालकों को विशेष ध्यान देना चाहिए। पशु बाड़े की छत से पानी का रिसाव न होने दें। बाड़े में जल-जमाव के कारण पशुओं में गंभीर रोगों जैसे कॉक्सीडियता या कुकड़िया रोग, पैर सड़ांध या फुट रॉट, आदि का खतरा कई गुना तक बढ़ जाता है। बाड़े की छत के निर्माण के लिए स्टील या लोहे की जस्ता चढ़ी नालीदार चादर का उपयोग करना

लाभकारी होता है। सप्ताह में कम से कम दो बार बाड़े में चूने के छिड़काव से पशुओं में पैर सड़ांध की समस्या को कम किया जा सकता है। अस्वच्छ बाड़े में थनैला रोग होने की आशंका भी अधिक होती है। यदि बाड़े में पानी का जमाव हो रहा हो, तो ऐसी स्थिति में बाड़े की समय-समय पर सफाई करें और बाड़े को शुष्क रखें। इससे घातक रोगों के जनक कहे जाने वाले जीवाणुओं व परजीवियों को नियंत्रित किया जा सकता है। पशुपालकों को बरसात का मौसम शुरू होने से पहले ही गाय-भैंसों को गल-घोंटू और लंगड़ी बुखार का टीका लगवा लेना चाहिए।

बरसात के मौसम में पशुओं में किलनी की समस्या भी बढ़ सकती है। यदि बाड़े में अत्यधिक संख्या में किलनियां होंगी, तो

मवेशियों में सर्रा, थिलेरिया रोग, बबेसोसिस, आदि का खतरा भी बना रहेगा। ऐसी स्थिति में यदि पशु को तेज बुखार और खून की कमी की शिकायत हो, तो उपचार के लिए तुरंत नजदीकी पशु चिकित्सालय ले जाना चाहिए। पशुओं के बाड़ों में तुलसी के पत्ते या लेमनग्रास रखने से परजीवी संक्रमण कम किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पशुपालक परजीवीनाशक औषधि (बुटोक्स स्प्रे 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी, शरीर पर स्प्रे) के प्रयोग से पशुओं को किलनी और मक्खियों से निजात दिला सकते हैं।

बरसात में खासकर बछड़ों को बाड़े में ही सीमित रखना चाहिए और अन्य दिनों के मुकाबले दूध का थोड़ा ज्यादा सेवन करवाना चाहिए। इससे बछड़े के शरीर में

*वैज्ञानिक (पशु औषधि), जानपदिक रोग विभाग; **प्रधान वैज्ञानिक, पशु औषधि विभाग, भाकृअनुप-भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली-243122 (उत्तर प्रदेश)

पर्याप्त मात्रा में ऊष्मा उत्पन्न होती है। एक माह से अधिक उम्र के बछड़ों में अनुशंसित अंतराल पर कृमिहरण किया जाना चाहिए। बरसात में पेट के कीटों का संक्रमण तेजी से फैलने लगता है। इसी प्रकार भेड़-बकरियों में भी कृमिहरण और उसके पश्चात पी.पी.आर. व फड़किया रोग (एंटरोटॉक्सिमिया) का टीकाकरण करवाना महत्वपूर्ण है। भेड़ों में मानसून के दौरान ऊन की कटाई न करने की सलाह दी जाती है। इसके अतिरिक्त, बरसात के दिनों में पशुओं को बिजली के खंभों से बांधकर नहीं रखना चाहिए।

आहार एवं रहन-सहन

बरसात में रोमंथी पशुओं को हरे चारे के साथ-साथ सूखा चारा भी दिया जाना चाहिए। हरी घास में बरसात के दौरान पानी की मात्रा अधिक होती है, जो केवल पशुओं का पेट भरने का काम करती है और अनुशंसित मात्रा में ऊर्जा प्रदान नहीं कर पाती है। यदि संभव हो, तो हरी घास को पशुओं को खिलाने से पहले धूप में सुखा लें। गाभिन पशु (छह माह से अधिक) को अतिरिक्त चारा और खनिज मिश्रण खिलाएं। पशुओं के चारे में धीरे-धीरे परिवर्तन करें। एकाएक परिवर्तन करने से पशु पेट फूलने (अफारा) और पोषण-संबंधी रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। मानसून में अत्यधिक हरे चारे के सेवन से पशु पतला गोबर करने लगते हैं, जो कि एक सामान्य व्यवहार है। पशुपालकों को मानसून में चारे को फफूंद से बचाकर रखने की जरूरत होती है। वातावरण में अत्यधिक आर्द्रता होने की वजह से सूखे



बाड़े की सफाई है आवश्यक

चारे में अक्सर फफूंदी लग जाती है। बरसात का मौसम शुरू होने से पहले ही सूखे चारे का पर्याप्त मात्रा में भंडारण कर लेना चाहिए। इसके लिए बरसात के पानी के स्तर से ऊपर किसी सुरक्षित स्थान का चयन किया जाना महत्वपूर्ण होता है।

बरसात के मौसम में पशुओं को सूखी बिछाली मुहैया कराई जानी चाहिए। इसके लिए भूसा एक कारगर विकल्प होता है। अत्यधिक बरसात के दिनों में पीने के स्वच्छ पानी की कमी न होने दें और समय-समय पर पशुओं को अन्य दिनों की भांति ही साफ पानी पिलायें। खेतों में स्थिर बरसात का गंदा पानी पीने से पशुओं में दस्त, क्लोस्ट्रीडियल रोग, एंथ्रेक्स जैसे घातक रोगों के संक्रमण का खतरा बढ़ सकता है।

पशुओं के शरीर के जखमों और घावों का शीघ्र ही पशुचिकित्सक से उपचार करवाना चाहिए अन्यथा खुले घावों में कीट (मैगट) पड़ सकते हैं। इससे बेचैनी, उत्पादन में गिरावट, मांसपेशियों की गलन व अन्य गंभीर लक्षण उत्पन्न हो सकते हैं।

बरसात में पशु शव का निस्तारण

बरसात के दिनों में पशुओं के शवों को 24 घंटों के भीतर निस्तारित किया जाना चाहिए। यदि समय पर सही विधि द्वारा पशु-शव का निस्तारण नहीं किया गया, तो इससे आसपास के वातावरण में दुर्गन्ध फैलेगी, पीने के पानी के स्रोत दूषित होंगे और आम जनमानस के लिए भी पशुओं से होने वाले घातक रोगों का खतरा भी बढ़ जाएगा। पशुओं के शवों को दफनाकर निस्तारित करना एक पारंपरिक तरीका है। इसके लिए जमीन के अन्दर खोदे हुए गड्ढे की गहराई 6 फीट होनी आवश्यक है। शवों को दफनाने के लिए सही स्थान का चयन भी महत्वपूर्ण है। गड्ढे के पानी के स्रोत से 100 फीट की दूरी होने के साथ-साथ उसका जल निकास भी बेहतर होना चाहिए। पशुपालकों को शव निस्तारण स्थल का पूर्व में ही चयन कर लेना चाहिए, जिससे समय पर शव को दफनाने में कोई कठिनाई न हो।

पशुपालकों को बरसात के दिनों में पशु प्रबंधन के लिए जागरूकता कार्यक्रमों में भाग लेकर तथा पशुओं की देखभाल करने के लिए अपने निकटतम पशुचिकित्सक से परामर्श कर, पशु-स्वास्थ्य प्रबंधन संबंधी महत्वपूर्ण जानकारीयां समय-समय पर एकत्रित करते रहना चाहिए। पशुपालकों को स्थानीय मौसम के पूर्वानुमान की नियमित जानकारी रखने से भी लाभ मिलेगा।

पालतू कुत्ते और बिल्ली की देखभाल

आंधी, आकाशीय बिजली और तेज बारिश पालतू पशुओं में तनाव पैदा कर सकती हैं। इसलिए आंधी अथवा बारिश का पूर्वानुमान होने पर पालतू पशुओं को घर के बाहर अकेला न छोड़ें। बरसात में पालतू कुत्ते और बिल्ली की अतिरिक्त देखभाल करने की जरूरत होती है। ये दोनों इस मौसम में पानी से फैलने वाले रोगों, पंजे और कान के संक्रमण से आसानी से ग्रसित हो सकते हैं। पालतू पशुओं की त्वचा, बालों और पंजों को सूखा रखने का प्रयत्न करें। लंबे समय तक इन्हें गीला न रहने दें। स्वच्छ व मुलायम तौलिये अथवा ब्लॉटिंग पेपर से साफ करें। प्रत्येक बार घर के बाहर से आने पर पशुओं के शरीर और पंजों को गुनगुने पानी से साफ करना चाहिए, जिससे गीली मिट्टी या कीचड़ चिपका न रहे। बरसात के दिनों में पालतू कुत्ते और बिल्ली के कान की रोजाना एक बार सफाई करनी भी आवश्यक है। किलनी संक्रमण से बचाव के लिए टिक कॉलर अथवा कुटकीनाशक दवाओं का प्रयोग करना लाभकारी होता है। बरसात के रुके हुए गंदे पानी का सेवन करने से पालतू कुत्ते और बिल्ली को रोकना चाहिए अन्यथा उल्टी, दस्त, भूख न लगना, पेट दर्द जैसे लक्षण परिलक्षित हो सकते हैं। अगर संभव हो, तो पशु को उबला हुआ पानी पिलाएं। बरसात के दिनों में घर का फर्श और दीवारें ठंडी महसूस होने लगती हैं इसलिए बिछाली के लिए गलीचे, कंबल आदि का उपयोग करना चाहिए जिसमें पशु आराम से बैठ और सो सकें।